प्रकाशन तिथि : 01 दिसम्बर, 2019
प्रेषण तिथि : 04 दिसम्बर 2019

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 18 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

संघ प्रमुख श्री का कलकत्ता प्रवास

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल माननीय जगदीप धनकड़ के निमंत्रण पर माननीय संघ प्रमुख श्री 12 से 15 नवम्बर तक कलकत्ता स्थित राजभवन के अतिथि रहे। अपने जयपुर प्रवास के दौरान माननीय राज्यपाल संघशक्ति पधारे थे एवं संघ प्रमुख श्री से पश्चिम बंगाल की समृद्ध संस्कृति से अवगत होने कलकत्ता पधारने का आग्रह किया था। इसी क्रम में 12 नवम्बर को संघ प्रमुख श्री कलकत्ता पहुंचे। दिन में विक्टोरिया पैलेस आदि स्थानों को देखा एवं रात्रि विश्राम राजभवन में किया। 13 नवम्बर को माननीय राज्यपाल भेंट करने पहुंचे और स्वयं साथ घूमकर राजभवन को दिखाया।

उल्लेखनीय है कि वर्तमान राजभवन ब्रिटिश भारत में वायसराय का आवास हुआ करता था। 13 की रात को संघ प्रमुख श्री के सम्मान में रात्रि भोज रखा गया जिसमें कलकत्ता में बने विभिन्न राजपूत संगठनों के पदाधिकारी शामिल हुए। 14 की शाम का भोजन भंवरसिंह रिड़मलसर के आवास पर रखा गया जहां अन्य प्रवासी राजस्थानियों से भेंट हुई। 14 की रात को ही राज्यपाल महोदय ने संघ प्रमुख श्री को अपने निजी आवास में आमंत्रित किया एवं सपत्नीक भेंट देकर सम्मानित किया। 15 को रात तक संघ प्रमुख श्री जयपुर पहुंचे। इस प्रवास के दौरान स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आदि महान लोगों के जीवन से जुड़े स्थलों का अवलोकन किया एवं उनके बारे में जानकारी प्राप्त की।

प्रदेश भाजपा संगठन महामंत्री पहुंचे 'संघशक्ति'

राजस्थान भाजपा के संगठन महामंत्री चन्द्रशेखर 22 नवम्बर को प्रातः माननीय संघ प्रमुख श्री से मिलने संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति पहुंचे। लगभग एक घंटे तक चली मुलाकात में विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। माननीय संघ प्रमुख श्री ने उन्हें कहा कि राजपूत समाज ने प्रारम्भ से भाजपा को सहयोग किया है। राजस्थान में पार्टी को खड़ा करने में राजपूत समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है लेकिन विगत वर्षों में भाजपा समाज के इस समर्थन को संभाल नहीं पाई है। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

श्री प्रताप फाउण्डेशन ने

लिखा प्रधानमंत्री को पत्र

केन्द्र सरकार द्वारा संविधान में संशोधन कर आर्थिक आधार पर पिछड़े अनारक्षित वर्ग को दिए आरक्षण में प्रदत्त सुविधाओं को ओ.बी.सी. के समकक्ष करने हेतु श्री प्रताप फाउण्डेशन के संयोजक माननीय महावीरसिंह सरवड़ी द्वारा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नाम 18 नवम्बर को पत्र लिखा गया है। उनसे निवेदन किया गया है कि समाज प्रारम्भ में अन्य पिछड़ा वर्ग में आरक्षण मांग रहा था लेकिन सितम्बर 2003 में तत्कालीन उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी से हुई वार्ता में आर्थिक पिछड़ों का अलग वर्ग बनाकर अन्य पिछड़ा वर्ग की सभी सुविधाएं देने की सहमति बनी थी। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

भारत भूमि पर एवं क्षत्रिय कुल में जन्म लेना गौरव की बात : पूनिया

प्रदेश भाजपाध्यक्ष का जताया आभार

आर्थिक रूप से पिछड़े अनारक्षित वर्ग को मिले आरक्षण की अचल संपति संबंधी शर्तों को हटवाने में भारतीय जनता पार्टी के विधायकों के सहयोग बाबत आभार प्रकट करने के लिए श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन ने 17 नवम्बर को भाजपा प्रदेश मुख्यालय पहुंच कर प्रदेशाध्यक्ष सतीश पुनिया व संगठन महामंदिर चन्द्रशेखर का बहुमान किया। इस अवसर पर सह संयजोक गजेन्द्र सिंह मानपुरा ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की जानकारी दी। प्रदेश संगठन मंत्री चन्द्रशेखर ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ जिस प्रकार से संस्कृति की रक्षा के लिए काम कर रहा है वह किसी जाति या वर्ग के लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारतीयता के लिए काम है। फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं का यह अनुशासित एवं मर्यादित कार्यक्रम संघ की शिक्षा की झलक है। प्रदेशाध्यक्ष पूनिया ने कहा कि भारत भूमि पर एवं क्षत्रिय कुल में जन्म लेना गौरव की बात है। उन्होंने माननीय संघ प्रमुख श्री के व्यक्तित्व के प्रति अपनी विनम्रता प्रकट की। उन्होंने केन्द्र में भी इस आरक्षण की विसंगतियों को दूर करवाने बाबत अपनी तरफ से पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन दिया। राजनीति के क्षेत्र में जातियों की प्रतिद्वंदता की अपेक्षा मिलकर काम करने की आवश्यकता जताई। कार्यक्रम का संचालन जयपुर टीम के सदस्य श्रवणसिंह बगड़ी ने किया।

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

1964 का उ.प्र.शि. चित्तौड़गढ़ में होना था लेकिन स्थान तय नहीं हो पाया था। पूज्य तनसिंह जी उन दिनों सांसद थे और दिल्ली में रहते थे। वहां से स्थानीय स्वयंसेवक को पत्र लिखकर स्थान की सूचना मांगी ताकि संघशक्ति में छापा जा सके। पत्र का जवाब भेजा गया कि स्थान तो बहुत से देखे लेकिन तय नहीं कर पा रहे। पत्र मिलते ही पूज्य श्री रात की रेल से चित्तौड़गढ़ के लिए रवाना हुए।

भूपाल राजपूत छात्रावास पहुंचकर नित्य कर्मों से निवृत्ति के बाद साइकिलें किराए लेकर स्थान देखने निकले। पूज्य श्री के साथ एक वे स्थानीय स्वयंसेवक एवं दूसरे एक स्थानीय सहयोगी थे। तीन साइकिल किराए पर ली लेकिन पूज्य श्री ने एक वापिस लौटा दी कि अनावश्यक किराया क्यों दिया जावे। स्थानीय स्वयंसेवक को अपनी साइकिल पर बिठाकर रवाना हुए। उन स्वयंसेवक ने साइकिल स्वयं चलाने का आग्रह किया लेकिन 'तुम मेरे से छोटे हो' यह कहकर मना कर दिया। दोपहर तक पहाड़ी पगडंडियों पर साइकिल चलाते रहे। एक स्थान देखा लेकिन छाया के अभाव में स्वीकृत नहीं हुआ। पसीने से लथपथ होने के बावजूद अपने साथी को साइकिल के डंडे पर बिठाकर चलते रहे। दोपहर बाद किले के उत्तर दिशा में एक पेड़ के नीचे बैठकर सुस्ताने लगे। दूसरे स्थान के बारे में पूछा तो बताया कि किले के उस तरफ दूसरी दिशा में है। तुरन्त खड़े हुए, चढ़ाई में साइकिल चलाना संभव नहीं था तो साइकिल कंधे पर उठाकर चल पड़े। साथी स्वयंसेवक ने स्वयं लेने का आग्रह किया लेकिन स्वीकार नहीं हुआ। स्थान देखा और फिर शहर के बीच से भारत की सबसे बड़ी पंचायत के सदस्य अपने साथी स्वयंसेवक को साइकिल के डंडे पर बिठाकर साइकिल चलाते हुए छात्रावास पहुंचे। रात की ट्रेन से पुनः दिल्ली लौट गए। ऐसी अनेक घटनाएं हैं उनकी कमठता एवं अपनत्व की।

सौभाग्यशाली हैं वे लोग जिन्होंने इस अपनत्व का साक्षात अनुभव किया। हम लोग भी भाग्यशाली हैं जो ऐसे महामानव की तपस्या के फल स्वरूप उद्घाटित पथ के पथिक हैं जिस पथ का प्रत्येक रज कण उनके पसीने से सीचिंत है। जिन्होंने अपने इस सौभाग्य को समझा वे आज उनके मार्ग पर चलकर उनके तनसिंहत्व को स्वयं में उद्घाटित करने को प्रस्तुत हैं, परमेश्वर उन सबकी इस समझ को बनाए रखें।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे....

- अभयसिंह रोडला

सी.डी.एस. परीक्षा

विगत अंक में हमने एन. डी. ए. परीक्षा के बारे में जानकारी प्राप्त की जिसके माध्यम से नेशनल डिफेंस एकेडमी में प्रवेश होता है। हमने यह भी जाना था कि नेशनल डिफेंस एकेडमी के तीन वर्षीय प्रशिक्षण के पश्चात कैडेट्स को इंडियन मिलिट्री एकेडमी, इंडियन एयरफोर्स एकेडमी तथा इंडियन नेवल एकेडमी में उच्चतर प्रशिक्षण हेतु भेजा जाता है। उपरोक्त तीनों एकेडमी में सीधे प्रवेश हेतु सी. डी. एस. परीक्षा आयोजित की जाती है। सी. डी. एस. परीक्षा द्वारा इन तीनों के अतिरिक्त ऑफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी (ओ.टी.ए.) में भी प्रवेश मिलता है।

एन. डी. ए. की तरह सी. डी. एस. परीक्षा भी संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) द्वारा वर्ष में दो बार आयोजित की जाती है। सामान्यतया फरवरी तथा नवम्बर माह में यह परीक्षा आयोजित होती है। केवल अविवाहित स्नातक ही उक्त परीक्षा हेतु आवेदन कर सकते हैं। युवतियां केवल ओ.टी.ए. में प्रवेश हेतु ही पात्र हैं। आयु सीमा निम्न प्रकार है-

इंडियन मिलिट्री एकेडमी :- 19-24 वर्ष
एयरफोर्स एकेडमी :- 19-24 वर्ष
इंडियन नेवल एकेडमी :- 19-22 वर्ष
ऑफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी :- 19-25 वर्ष

ओ.टी.ए. के अलावा अन्य तीन एकेडमी में प्रवेश के इच्छुक अभ्यर्थी को तीन प्रश्नपत्र देने होते हैं - अंग्रेजी, सामान्य ज्ञान तथा गणित। तीनों प्रश्नपत्र 100-100 अंक के होते हैं। ओ.टी.ए. में प्रवेश हेतु केवल अंग्रेजी तथा सामान्य ज्ञान की परीक्षा देनी होती है। यह दोनों प्रश्नपत्र भी 100-100 अंक के होते हैं। सभी प्रश्नपत्र बहुवैकल्पिक प्रकार के होते हैं।

एन. डी. ए. परीक्षा की भांति सी. डी. एस. परीक्षा में उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को भी सर्विस सिलेक्शन बोर्ड (एस.एस.बी.) के साक्षात्कार से गुजरना होता है। साक्षात्कार में सफल अभ्यर्थियों का चिकित्सकीय परीक्षण होता है तथा चयनित अभ्यर्थियों को संबंधित एकेडमी में प्रवेश मिलता है। **(क्रमशः)**

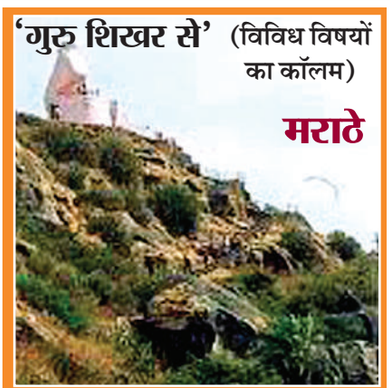

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

मराठा दक्षिणी सल्तनतों की सेनाओं में सेवाएं देने वाले सैनिकों के लिए एक पद के रूप में प्रयुक्त होने वाला शब्द था। शिवाजी महाराज के पिता शाहजी सहित कई मराठा योद्धा मूल रूप से इन सेनाओं में काम करते थे। शिवाजी महाराज ने स्वतंत्र मराठा साम्राज्य स्थापित किया। मराठा महासंघ 1774 से लेकर 1818 ई. तक भारत की समृद्ध साम्राज्यवादी शक्ति रहा। जो दक्खन (बेलगाम से तुन्गभद्रा) से मराठवाड़ा (वर्तमान महाराष्ट्र) तक फैला था। नागपुर (विदर्भ) सतारा, पूना, कोल्हापुर इसके शक्ति केन्द्र रहे। जिसे पेशवाओं ने मालवा मध्य तथा उत्तर पश्चिम भारत में पेशावर (अब पाकिस्तान में) तक फैलाया था। मूलरूप से मराठा क्षत्रियों की एक उपशाखा रही है। मराठों की उत्पति द्वापर में महाभारत के युद्ध के पश्चात हुई। ये अपने को व्यास, शुक्राचार्य, वशिष्ठ, वामदेव ऋषियों के गणों से मानते हैं तथा अपने को सूर्यवंशी कहते हैं। महाराष्ट्र में रहने वाला मराठी है परन्तु हर कोई मराठा नहीं है, मराठा शब्द मूलतः क्षत्रियों का द्योतक है। शिवाजी महाराज के पूर्वज अपने आपको चित्तौड़गढ़ (मेवाड़) के शिशोदियों के वंशज मानते हैं। जो महाराष्ट्र में भोंसले खानदान से जाने जाते हैं। शिवाजी के वंशजों की कोल्हापुर रियासत है। मराठे सरदार अपनी कुलदेवी के रूप में तुलजा भवानी को मानते हैं। मराठा क्षत्रियों की कुछ मुख्य उप जातियां - राणा, राणे, भोंसले, सिन्दे, शिशोदा, ठाकरे, जगताप, चह्वाण, पवार, जाधव, पाटिल, सालूके, निकुम्भ, देशमुख, भागवत, मोरे, मोर्य, रणौसिंघ आदि प्रमुख हैं।

मराठा काल में पेशावओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। पेशावा लोगों को पहले भट्ट परिवार के नाम से जाना जाता था। वैसे पेशवा शब्द का प्रयोग होता था मुख्य सेनापति के लिए, यह फारसी शब्द है जिसका अर्थ होता है 'अग्रणी'। पेशवा पद कोई वंशानुगत नहीं होता था, यह भी जरूरी नहीं था कि पेशवा क्षत्रिय कुल से ही हो। शिवाजी के वंशजों की रियासत कोल्हापुर को मेवाड़ का वंशज होने पर नाज है। यहां के शासक शाहुजी महाराज ने 1902 ई. में पिछड़ों को आरक्षण दिया तथा शुद्रों को सम्मान दिया। जिसके चलते वे उनके पूजनीय बन गए। कभी परमार राजाओं विक्रमादित्य एवं राजा भोज की राजधानी रही मालवा की धार नगरी एवं देवास रियासत पवार मराठों की अन्य दो रियासतें हैं। जब मुगलों के सम्राज्य का सूरज भारत में अस्तांचल की ओर जा रहा था तथा ईस्ट इण्डिया कंपनी के अंग्रेज व्यापारी से शासक बन रहे थे तब मराठों के पेशावाओं के अधीन तीन शक्तिशाली सेनापति अलग से निकले जिन्होंने तीन बड़ी रियासतों का निर्माण किया। ये रियासतें थी इन्दौर, ग्वालियर व बड़ौदा।

इन्दौर रियासत मालवा क्षेत्र की विशाल रियासत रही है। इसके शासक होलकर कहलाते थे। होलकर मूल रूप से पशु चरवाहे (यादव या कुरुबा) कृषक वर्ग से जाने जाते थे। जो कभी मथुरा से आकर दक्षिण के होल गांव क्षेत्र में बस गए थे जिससे होलकर कहलाए। यहां से मल्हार राव होलकर सन् 1721 ई. में पेशवा की सेना में आया। मालवा विजय में पेशावा बाजीराव की मदद कर यहां की सूबेदारी प्राप्त की तथा इसने इन्दौर में नई रियासत की नींव रखी। मलहार राव के पुत्र खाण्डेराव की विधवा रानी अहिल्या बाई थी, जिसने इन्दौर पर तीस वर्ष शासन किया। रानी अहिल्या बाई सुव्यवस्थित शासन, राजनीतिक सूझबूझ, धार्मिक सहिष्णुता, प्रजावत्सल, दान पुण्य तथा भारत वर्ष के तीर्थ स्थानों पर भवन निर्माण एवं मंदिर पुनरुद्धार के लिए प्रसिद्ध है। उसने कई नदियों एवं तीर्थों में घाट व भवन बनवाए। बनारस का काशी विश्वनाथ मंदिर व गुजरात के द्वारका का कृष्ण भगवान के मंदिरों का उसी ने जीर्णोद्धार किया। बड़ोदा के गायकवाड़ वंश की स्थापना मराठा सेनापति पिलाजी राव गायकवाड़ ने मुगल साम्राज्य के क्षेत्र गुजरात के दक्षिणी भाग में जीत कर की। गायकवाड़ अपने को यदुवंशी तथा कृष्ण का वंशज बताते हैं। गाय व किंवाड़ (फाटक) को मिलाकर गायकवाड़ शब्द बना। ये भी मूल रूप से कृषक व पशु चरवाहे ही थे। बड़ोदा रियासत सूरत के दक्षिण से लेकर उत्तर में अहमदाबाद से आगे महेसाणा जिला तक फैली हुई थी। सियाजीराव गायकवाड़ तृतीय (1863-1939) यहां प्रतापी राजा हुए। वे महाराष्ट्र के एक गरीब चरवाहे के घर जन्म लेकर बड़ोदा महारानी यमुना बाई के गोद आए थे। बैंक आफ बड़ौदा, सियाजी राव विश्वविद्यालय, लक्ष्मी निवास पैलेस आदि इन्हीं की देन है, बड़ोदा रियासत के हर बड़े कस्बे में स्कूल एवं पुस्तकालय बनवाए थे। ये छुआछूत एवं जाति प्रथा में विश्वास नहीं रखते थे। डॉ. भीमराव अम्बेडकर को विलायत में इन्होंने ही पढ़ाया था। बड़ोदा राज परिवार से कई सदस्य लोकसभा एवं राज्य विधानसभा के सदस्य व मंत्री रहे हैं।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

महोबा, बांदा, फतेहपुर व कानपुर में सम्पर्क

महोबा

कानपुर

विगत वर्षों में उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में संघ का काम प्रारम्भ हुआ है। अनेक शिविर आयोजित हुए हैं एवं स्थानीय लोग सहयोगी भी बने हैं। जयपुर में रहने वाले जितेन्द्र सिंह सिसरवादा को यहां का दायित्व सौंपा हुआ है और वे यहां निरन्तर सम्पर्क करते रहते हैं। इसी क्रम में 22 नवम्बर से 26 नवम्बर तक जितेन्द्रसिंह एवं उनकी पत्नी संतोष कंवर इस क्षेत्र में सम्पर्क यात्रा पर रहे। 23 नवम्बर को मां चन्द्रिका महिला महाविद्यालय में पूज्य आयुवानसिंह शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में कार्यक्रम रखा गया जिसमें स्थानीय सहयोगी शामिल हुए। उन्हें पूज्य आयुवानसिंह जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के बारे में बताया गया। 24 नवम्बर को महोबा जिले के कबरई में डॉ. महेन्द्र सिंह तोमर के घर बैठक रखी गई। इसी दिन बांदा स्थित पुष्पा क्लिनिक में बैठक का आयोजन कर संघ व सामाजिक जीवन के बारे में चर्चा की गई। यहां नरेन्द्रसिंह परिहार ने पूज्य आयुवानसिंह जी के साहित्य के बारे में जानकारी दी। सबलसिंह, सुरेन्द्रसिंह आदि ने भी चर्चा में अपनी भागीदारी निभाई। 25 नवम्बर को फतेहपुर में समाज के लोगों से सम्पर्क कर संघ व समाज के बारे में चर्चा की गई। 25 की शाम को घाटमपुर में सहयोगी समाज बंधुओं के साथ बैठकर आगामी शिविरों के बारे में चर्चा की गई। यहां पहले भी संघ के शिविर लग चुके हैं। 26 नवम्बर को कानपुर में दो कार्यक्रम रखे गए। कालपी रोड स्थित आर्मापुर पी.जी. कॉलेज में बैठक रखी गई जिसमें कॉलेज प्राचार्य डॉ. गायत्री सिंह ने ग्रीष्मावकाश में बालिका शिविर लगाने की बात कही। बैठक में डॉ. आशासिंह, डॉ. रेखासिंह, युवराजसिंह, मोहितसिंह चौहान, सुजीतसिंह, डॉ. ए.पी. सिंह भदौरिया, मनबोधनसिंह, डॉ. कुसुमसिंह चंदेल, डॉ. सुषमासिंह, ज्योतिसिंह, ऋचसिंह, कामिनीसिंह आदि ने भागीदारी निभाई। संतोष कंवर सिसरवादा ने यहां संघ एवं उसकी कार्य प्रणाली की जानकारी दी। कानपुर में ही दिन में चार बजे इन्द्रजीतसिंह परिहार के घर बैठक रखी गई जिसमें बड़े राजा अरविंदसिंह कुशवाह ने संघिक प्रणाली की जानकारी दी।

शताब्दी वर्ष के तहत अजमेर में स्नेहमिलन

माननीय संघ प्रमुख श्री के निर्देशानुसार यह वर्ष संघ के द्वितीय संघ प्रमुख पूज्य आयुवानसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इसके तहत पूरे वर्ष उनकी स्मृति में कार्यक्रम आयोजित किए जाने हैं। 17 नवम्बर को इसी उपलक्ष में अजमेर के रघुकुल विद्यालय में स्नेहमिलन आयोजित किया गया। स्नेहमिलन में तेजसिंह आंतरोली द्वारा पूज्यश्री का जीवन परिचय दिया गया। एडवोकेट देवेन्द्रसिंह ने पूज्य तनसिंह जी व पूज्य आयुवान सिंह जी के प्रकाशित पत्रों का वाचन किया एवं तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत करवाया। इतिहासकार रघुनाथसिंह कालीपहाड़ी द्वारा लिखित लेख 'मेरी साधना-समाज को अमूल्य देन' का भी पठन किया गया। मुख्य वक्ता एवं वयोवृद्ध समाज सेवक प्रहलादसिंह पीह ने चौपासनी आंदोलन, भू-स्वामी आंदोलन व श्री क्षत्रिय युवक संघ में माट्साब की नेतृत्व क्षमता का वर्णन करते हुए उन्हें कुशाग्र बुद्धि का धनी बताया। उन्होंने पूज्य तनसिंह जी व पूज्य आयुवान सिंह के साथ बिताए समय के संस्मरण सुनाए। उनकी साहित्यिक कृतियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। स्नेहमिलन का संचालन विजयराजसिंह जालिया ने किया।

कर्नाटक के शिमोगा में शिविर सम्पन्न

समाज में संघकार्य की निरन्तर बढ़ती मांग के अनुरूप देश के विभिन्न क्षेत्रों में समाज बंधुओं के सहयोग से संघ के शिविरों का आयोजन हो रहा है। इसी क्रम में दक्षिण भारत में कर्नाटक राज्य में बेंगलुरु के पास शिमोगा में एक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। 15 से 17 नवम्बर तक सम्पन्न इस शिविर का संचालन पुणे के प्रांत प्रमुख रणजीत सिंह चौक ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों को संघ की कार्यप्रणाली से अवगत कराते हुए कहा कि समाज की युवा पीढ़ी में क्षत्रियोचित संस्कारों का सिंचन संघ शाखा व शिविरों के माध्यम से कर रहा है। समाज को एकता के सूत्र में बांधने का एकमात्र उपाय श्री क्षत्रिय युवक संघ ही है। ईश्वर की कृपा से हम सभी को इस अद्वितीय यज्ञ में सहभागी बनने का अवसर मिला है। लापरवाही से कहीं यह अवसर खो न जाये, अतः जागृत रहें और संघ-दर्शन को जीवन में उतारने का अभ्यास करें। शिविर में बेंगलुरु क्षेत्र में रहने वाले समाज के युवा तथा प्रवासी समाजबंधु सम्मिलित हुए। शिविर की व्यवस्था में बालाजी सिंह, सत्यनारायण सिंह, भरत सिंह मैसूर, भवानी सिंह दूधवा, ईश्वर सिंह दूधवा, विक्रम सिंह गंगासरा, मोहन सिंह सांगाना, शम्भूसिंह बिशनगढ़, चैनसिंह देवकी, तनेसिंह आकवा, दलपतसिंह भोजावास, भवानी सिंह सोढा, महेंद्र सिंह धरबलो की ढाणी आदि ने सहयोग किया।

श्री हनवंत शाखा में परिचय कार्यक्रम

जोधपुर के श्री हनवंत बोर्डिंग हाउस की हनवंत शाखा में 17 नवम्बर को परिचय कार्यक्रम रखा गया जिसमें नियमित शाखा में आने वाले स्वयंसेवकों के अलावा छात्रावास में रहने वाले अन्य छात्र भी आए। छात्रों ने आपस में परिचय किया एवं परिचय के महत्व पर चर्चा की। इस अवसर पर श्री क्षत्रिय युवक संघ का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया।

(पृष्ठ दो का शेष)

मराठा... ग्वालियर के सिंधिया राजघराने के मूल पुरुष राणोजी सिंधिया सतारा (महाराष्ट्र) जिले के मूल निवासी थे। सिंधिया उपनाम सिंदे शब्द से बना है। मूलरूप से ये कुर्मी अथवा कृषक थे। पेशवाओं की सेवा में रहते हुए राणोजी ने उज्जैन (मालवा) को अपनी राजधानी बनाया तथा कालान्तर में ग्वालियर भी हथिया लिया। ग्वालियर का भूभाग कभी कच्छवाहों, तोमररों,चौहानों व भदोरियों के अधीन था जो कि राजपूत क्षत्रिय थे। महादजी सिंधिया एवं जीवाजी राव सिंधिया यहां के प्रतापी शासक रहे। जीवाजी की महारानी राजामाता विजयाराजे सिंधिया भारतीय राजनीति में शिखर पर रहीं। उनके पुत्र माधवराव तथा पौत्र ज्योतिरादित्य केन्द्र में मंत्री रहे। उनकी पुत्री वसुंधरा राजे केन्द्र में मंत्री तथा राजस्थान की मुख्यमंत्री रही। उनकी एक पुत्री यशोधरा राजे मध्यप्रदेश सरकार में मंत्री रही।

संपादकीय

'ना मैं अंतिम व्यक्ति, ना मेरा अंतिम जन्म'

भारत के एक पूर्व प्रधानमंत्री ने अपनी आत्मकथा में एक स्थान पर लिखा कि 'जीवन अपने हाथ में नहीं है। अपने वश में कर्म है। जीवन लंबा चल सकता है, वह कल भी समाप्त हो सकता है। दोनों स्थितियों में मैं यह मानता हूं कि कोई व्यक्ति इतिहास का आखिरी व्यक्ति नहीं है। वह सारी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता। जितना हो सके उतना पूरी लगन से प्रयास करना चाहिए।' यही वह प्रेरणा होती है जो व्यक्ति को कर्म में रत करती है। इस प्रेरणा के अभाव में व्यक्ति परिणाम की चिंता में कर्म प्रारम्भ ही नहीं कर पाता और जीवन मुट्ठी में भरी रेत की तरह रीतता जाता है। यदि व्यक्ति कार्य प्रारम्भ करने से पहले यह विचार कर लें कि मैं इतिहास का अंतिम व्यक्ति नहीं हूं, मेरे साथ ही यह मानव सभ्यता समाप्त नहीं होने वाली है तो वह अपने कार्य के परिणाम की अपेक्षा अपने कर्म का चिंतन करेगा क्यों कि वश में तो केवल कर्म ही है। इसी चिंतन से हमारा कर्म कर्मयोग बन पाता है। इसी चिंतन से सभ्यता का विकास व्यक्ति के जीवन काल से बाहर निकल कर पीढ़ियों के लिए फलदायी बन पाता है। यदि जीवन व्यवहार का हम गहराई से पर्यवेक्षण करें तो पाएंगे कि उसकी सम्पूर्ण क्रियाएं स्वाभाविक रूप से इसी चिंतन के अनुरूप चलती हैं लेकिन हमारी इतिहास का अंतिम व्यक्ति बनने की चाह उसमें असंतुलन पैदा करती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य ऐसा ही स्वाभाविक कार्य है इसलिए अपनी स्वाभाविक मंथर गति से अपने लक्ष्य की ओर गतिमान है। पूज्य तनसिंह जी के अनुसार हम जो पथ बनाना चाहते हैं उसमें आज अनेक गड्ढे हैं, हमारी पीढ़ी का काम तो उसको समतल करने मात्र तक है, उस पर राजमार्ग बनाने का काम आने वाली पीढ़ियों के लिए छोड़ देना चाहिए। लेकिन क्या हम ऐसा कर पाते हैं? हम तो उस राजमार्ग पर स्वयं ही चलने की जिद लेकर बैठे हैं और उसी के चिंतन में गड्ढों को भरने का काम भी प्रारम्भ नहीं कर पा रहे। हमें इस परमेश्वरीय विधान में विश्वास ही नहीं है कि जो काम प्रारम्भ होगा वह पूर्ण भी होगा लेकिन हमारी चाह के अनुरूप पूर्णता के चिंतन में हम प्रारम्भ ही नहीं कर पाए तो वह कभी धरातल पर नहीं उतरेगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ तो पूर्व प्रधानमंत्री जी की उपरोक्त उक्ति से भी आगे बढ़कर भारत के इस शाश्वत सिद्धांत को प्रतिपादित करता है कि हमारा जीवन जिस प्रकार इतिहास का अंतिम जीवन नहीं है वैसे ही हमारा यह जन्म भी सृष्टि क्रम में हमारा अंतिम जन्म नहीं है। जन्मान्तरवाद एवं कर्मवाद का भारतीय सिद्धान्त कहता है कि हमारा यह जीवन हमारी अटूट जीवन श्रृंखला की एक कड़ी मात्र है। अंतिम कड़ी नहीं है बल्कि ऐसी अनेकानेक कड़ियों में से एक मात्र कड़ी है। हमें यह स्वतंत्रता है कि हमारी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग कर इसे अंतिम कड़ी बना सकते हैं लेकिन नहीं बन पाए तो कोई चिंता का विषय नहीं क्यों कि जब तक वह अंतिम कड़ी नहीं आती श्रृंखला बनी रहेगी और हमारे शेष रहे कर्म को हम अपने अगले जन्म में पूर्ण करेंगे। इसीलिए तो माननीय संघ प्रमुख श्री प्रायः कहते हैं कि इस प्रांगण में हम पुनः खेलने आएंगे और जब तक लक्ष्य को हासिल नहीं कर लेते आते रहेंगे, बस हमारी नजरें लक्ष्य पर बनी रहे। इस प्रकार हमें यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि हमारे वश में हमारी भूमिका मात्र है। हमारी वह भूमिका हम श्रेष्ठतम तरीके से किस प्रकार निभा सकते हैं, इस विषय पर हमें अपने आपको केन्द्रित करना चाहिए। हमारी उस भूमिका का परिणाम क्या होगा, हम काम को कितना कर पाएंगे, कितना रास्ता तय कर पाएंगे, इसका जोड़ बाकी या गुणा भाग करने में हमारा अमूल्य समय व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए क्यों कि ना ही तो हम इतिहास के अंतिम व्यक्ति हैं और ना ही यह हमारा आखिरी जन्म है। हमारे करने से शेष रहे कार्य को आने वाली पीढ़ी पूर्ण करेगी और परमेश्वर को हमारे से ही करवाना होगा तो वे पुनः हमारे अधूरे कार्य को करने के लिए हमें भेजेंगे। यही विश्वात्मा के दृष्टिकोण को पहचानना होता है कि उसकी योजना के अनुसार हमें जिस कर्म में लगना है, जैसी स्वभाव और प्रकृति उसने हमारी बनाई है उसके अनुरूप हम उस कर्म में रत हो जाएं और शेष उसके भरोसे छोड़ दें जिसने हमारे लिए इस प्रकार की परिस्थिति बनाई है। हमारा यही दृष्टिकोण हमारे उस कर्म को कर्मयोग बना देगा, हमारे उस कर्म को ही विश्वात्मा की आराधना बना देगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ का पूरा दर्शन एवं उस दर्शन का व्यवहारिक स्वरूप 'सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली' हमें शनैः शनैः मंथर गति से उधर ही खींचती है। आवश्यकता बस उसका कार्यक्षेत्र बनना मात्र है और वह हमारे स्वयं के पुरुषार्थ से ही संभव हो पाएगा।

खरी-खरी

'भारत का नजरिया : भारतीयता'

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी डायरी में एक जगह लिखा है 'एक परिचित को छोड़कर अपरिचित गरीब मुसलमान के यहां जाकर खाना खाया। केवल इसलिए कि उसका निमंत्रण बड़ा प्रेम भरा और आग्रहपूर्ण था।' यही भारतीयता है। भारतीयता की जड़ों में प्रेम है, भारतीयता की जड़ों में सह अस्तित्व है भारतीय की जड़ों में सहिष्णुता है। भारत को समझने के लिए इस भारतीयता को समझना आवश्यक है। भारतीयता तो मुसलमान शरणार्थी के लिए मुसलमान शासक से लड़कर अपने आप का सर्वस्व समाप्त करने की सीख देती है। भारतीयता तो दुश्मन की संतान को अपनी संतान से भी अधिक सावधानीपूर्वक धरोहर के रूप में पालने की परिचायक है। भारतीयता तो अपने पुत्र द्वारा अपने दुश्मन की स्त्रियों के हरण की अनुमति नहीं देती और उन्हें ससम्मान दुश्मन के शिविर में लौटाने के लिए अपने पुत्र की जान जाने का खतरा मोल लेने से भी नहीं हिचकती। भारतीयता का ध्वज वाहक सदा से क्षत्रियत्व रहा, क्षात्र धर्म रहा और क्षात्र धर्म जहां अपने कर्तव्य पालन में बाधक व्यक्तिगत भावनाओं को रौंदने तक की क्रूरता को स्वीकार करता है वहीं अपने कर्तव्य पालन में प्रेरक हर भावना को फूल की तरह सहेजने की कोमलता को भी अंगीकार करता है। भारत को भारत की जड़ों में खोजना हो तो हमारे पूर्वजों द्वारा परिपालित इस भारतीयता में खोजना चाहिए और भारत की समस्त समस्याओं का उपाय भी भारतीयता में सन्निहित है। लेकिन दुर्भाग्य से वर्तमान भारत के भाग्य विधाताओं की प्रेरणा स्थली यह भारतीयता नहीं है। वे यह नहीं सोचते कि यह भारत औरंगजेब और अलाउद्दीन जैसे क्रूर शासकों के शासन के बावजूद जिंदा रहा। वे उस प्रेरणा को भी अंगीकार नहीं करना चाहते जिसके कारण इस भारत ने सिकंदर से लेकर अब तक के हर आक्रांत को या तो मिटा दिया या समाहित कर लिया। उनकी प्रेरणा स्रोत अमेरिका की क्रांति है, वे अफ्रीका के श्याम श्वेत संघर्ष में प्रेरणा ढूंढ़ते है, वे जर्मनी और इटली के नाजीवाद और फासीवाद में प्रेरणा ढूंढ़ते है। उनको यहुदियों का राष्ट्रवाद प्रेरित करता है। उनको मार्क्स का मजदूर मालिक संघर्ष आकर्षित करता है। उनको गैरीबाल्डी व मुसोलिनी अच्छे लगते है। वे चर्चिल और स्टालिन में भारत को ढूंढ़ते है। इसी का परिणाम है कि वे भारत को भारत के नजरिये से देखने से बहुत पहले ही च्युत हो चुके हैं और इसी का परिणाम है कि यहां अध्ययन अध्यापन में संप्रदाय घुस गए हैं। इसी का परिणाम है कि भारत का धर्म छुर्रमुई बनकर किसी मुस्लिम के पढ़ाने से समाप्त होने का खतरा पैदा हो गया है और इसी का परिणाम है कि लोगों को इस प्रवृत्ति में बहुसंख्यक दादागिरी की बात दिखाई देती है। इसी लिए तो आजकल भारत में दोयम दर्जे की नागरिकता का जुमला चल निकला है। जब शासक की दृष्टि केवल सत्ता को प्राप्त करने या सत्ता को बनाए रखने पर रह जाती है तो कर्तव्य बहुत पीछे छूट जाता है और ऐसे में शासक द्वारा किसी वर्ग विशेष को खुश करने के हथकंडे अपनाए जाते हैं और वे ही हथकंडे आज के भारत की स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं। एक धर्म विशेष के किसी भी व्यक्ति को सांसद का टिकट न देना भारतीयता नहीं है तो इसी आधार पर भारत में बहुसंख्यक दादागिरी का हौवा खड़ा कर तथा कथित अल्पसंख्यकों को अपने पक्ष में लामबद्ध करना भी भारतीयता नहीं है। भारत में अल्पसंख्यक बहुसंख्यकवाद हावी होता तो जरा गौर करें कि थोड़ी सी संख्या में आए मुसलमान यहां लगभग 800 वर्षों तक शासन कैसे कर गए? भारत की जनसंख्या के समक्ष नगण्य संख्या में आए अंग्रेज यहां 200 वर्षों तक कैसे टिक पाए यह सब इसीलिए हुआ कि भारत में कभी अल्पसंख्यक बहुसंख्यकवाद नहीं रहा। पश्चिम के विचार से प्रभावित समीक्षक भले ही इसे भारत की कमजोरी मानें लेकिन यह भारत की विशेषता है। भारत का जनमानस सदैव गीता का उपासक रहा है, उसकी नजर में स्वयं का कर्तव्य भाव ही महत्वपूर्ण रहा और सत्ता या शासन सदैव उसकी नजर में साधन रहा, साध्य नहीं। इसीलिए किसी संप्रदाय विशेष की संख्या के आधार पर भारत में हौवा खड़ा करने वाले लोगों की बातों का तत्कालिक प्रभाव भले ही भारत को विचलित कर दें लेकिन भारत की जड़ों में प्रेम, सहिष्णुता एवं सह अस्तित्व इतना गहराई से समाया हुआ है कि वे लंबे नहीं चल सकते। अल्पसंख्यक तुष्टिकरण करने वाले जिस प्रकार से इन दिनों में भारत से गायब होते से दिखे उसी प्रकार बहुसंख्यक तुष्टिकरण में अपना वर्तमान और भविष्य संवारने में उद्यत लोग भी मिट जाएंगे क्यों कि यह भारत का स्वभाव नहीं है। भारत का मूल स्वभाव कर्तव्य कर्म का निर्वहन है, निष्काम कर्तव्य कर्म और यही क्षत्रियत्व है, क्षात्रधर्म है, यही भारतीयता है। इसीलिए आएं अपनी शक्ति और क्षमता को इस भारतीयता के चिंतन में लगाकर उसका सदुपयोग करें।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	चार दिवसीय प्र.शि. बालिका	22.12.2019 से 25.12.2019 तक	**पिपलिया मंडी**, मंदसौर (मध्यप्रदेश)। (नेचुरल पब्लिक स्कूल) **सम्पर्क सूत्र :** 9926685051, 7000207921 8085207733
02.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	22.12.2019 से 25.12.2019 तक	जीएसएम स्कूल, **महागढ़**, नीमच (मध्यप्रदेश)। **सम्पर्क सूत्र :** 9425974693, 8349912938
03.	चार दिवसीय प्र.शि. बालिका	25.12.2019 से 28.12.2019 तक	शिवम मैरिज गार्डन, नैनवा रोड, **बूंदी**। सम्पर्क सूत्र : 9602064222, 9950663010
04.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	भोजराजसिंह की ढाणी, **जैसलमेर** रामगढ़ जैसलमेर मार्ग पर स्थित।
05.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	**सिरसला,** नागौर।
06.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	**भादला** (बीकानेर)। नोखा के लखारा चौराहे व बीकानेर के गंगानगर चौराहे से बस।
07.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	**महरोली** (सीकर)।
08.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	26.12.2019 से 29.12.2019 तक	आशापुरा माता मंदिर, **गैलाना**। तहसील सुवासरा मंदसौर (मध्यप्रदेश) **सम्पर्क सूत्र :** 9977800497, 9926738399, 9754218326
09.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	28.12.2019 से 31.12.2019 तक	महाराज मूलसिंह डिग्री कॉलेज। **लाखेरी**। **सम्पर्क सूत्र :** 9530222327, 9828024189
10.	दंपती शिविर 35 वर्ष तक की दंपती हेतु	02.01.2020 से 05.01.2020 तक	आलोक आश्रम, **बाड़मेर**।
11.	दंपती शिविर 35-50 वर्ष तक की दंपत्ती हेतु।	09.01.2020 से 12.01.2020 तक	आलोक आश्रम, **बाड़मेर**

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

(पृष्ठ एक का शेष) प्रदेश भाजपा... इसके कारण समाज में भाजपा के प्रति लगाव कम हुआ है। संघ प्रमुख श्री ने उनसे कहा कि भाजपा को अंतरावलोकन करना चाहिए कि एक तरफा समर्थन की हद तक साथ रहने वाला समाज आज दूर क्यों जा रहा है। संगठन महामंत्री ने कहा कि पार्टी इस विषय पर गंभीरता से चिंतन कर रही है। इसके अलावा देश की वर्तमान राजनीतिक स्थिति के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक एवं आध्यात्मिक विषयों पर भी चर्चा हुई। वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीरसिंह सरवड़ी एवं श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के सह संयोजक गजेन्द्रसिंह मानपुरा भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

(गतांक से आगे)

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य न केवल एक महान विजेता और साम्राज्य निर्माता ही था वरन् एक कुशल प्रशासक भी था। उसने साम्राज्य के सुचारु संचालन के लिए अनेक नवीन प्रशासनिक पद सृजित किए व योग्यतम अधिकारियों की नियुक्ति की। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का दीर्घकालीन शासन शान्ति, सुशासन एवं समृद्धि का काल रहा। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के काल में चीनी यात्री फाह्यान भारत आया था वह अपने यात्रा विवरण में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की शासन व्यवस्था की उच्च शब्दों में प्रशंसा करता है वह लिखता है कि 'प्रजा सुखी एवं समृद्ध है और परस्पर सौहाद्धपूर्वक रहते हैं, दण्ड विधान अत्यन्त ही सरल है और पूरे देश में अपराध नाम मात्र के होते हैं मार्गों पर आवागमन अत्यन्त ही सुरक्षित है और लोगों को यात्रा में किसी भी प्रकार के भय का सामना नहीं करना पड़ता। राजा द्वारा प्रजा पर अत्यन्त ही कम कर लगाए गए हैं और कर व्यवस्था द्वारा एकत्र कर प्रजा के कल्याण में ही व्यय किया जाता है।' चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के ऐतिहासिक व साहित्यक स्त्रोतों और फाह्यान के विवरण से पता चलता है कि वर्तमान में जिस लोक कल्याणकारी राज्य की बातें सरकारें करती हैं उसका सही और वास्तविक स्वरूप गुप्त शासकों विशेषकर चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासनकाल में देखने को मिलता है। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य युद्ध क्षेत्र में जितना महान था उतना ही शासन करने में भी कर्मठ था। वह स्वयं विद्वान और विद्वानों का आश्रयदाता था। पाटिलपुत्र और उज्जयिनी विद्या और विद्वानों के प्रमुख केन्द्र थे। उसके दरबार में देश-विदेश के विद्वान आश्रय पाते थे जिनमें से नौ विद्वानों की एक मण्डली 'नवरत्न' कहलाती थी। संस्कृत भाषा के श्रेष्ठतम कवि, नाटककार कालिदास इनमें अग्रण्य थे, कालिदास के अतिरिक्त अमरसिंह, शंकु, क्षपणक, धन्वन्तरि, वेतालभट्ट, वराहमिहिर, वररुचि, घटकर्पर प्रमुख थे। स्वयं चन्द्रगुप्त भी संस्कृत भाषा का बड़ा विद्वान था। अन्य गुप्त सम्राटों की तरह चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य भी वैष्णव धर्म का अनुयायी था तथा उसने 'परम भागवत' की उपाधि धारण की, वह वैदिक यज्ञों का अनुष्ठान किया करता था परन्तु एक शासक के रूप में वह पूर्ण तया धर्म सहिष्णु शासक था। प्रजा को अपनी इच्छानुसार धर्माचरण की स्वतंत्रता प्राप्त थी। चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री वीरसेन शैव था तो मुख्य सेनापति आभ्रकार्देव बौद्ध था। उसके शासनकाल में विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों में सद्भाव व मेलमिलाप था। उसके समय अनेकों विदेशियों ने हिन्दू धर्म और संस्कारों को अपना लिया था। समुद्र पार के द्वीपों जावा, सुमात्रा, दक्षिण पूर्व एशिया के अनेक द्वीपों में हिन्दू धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार हो गया था। इस प्रकार चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य एक महान विजेता, कुशल प्रशासक, कुटनीतिज्ञ, साहित्य और विद्या का संरक्षक, विद्वानों का आश्रयदाता था। वह बहुमुखी प्रतिभा का धनी था। समुद्रगुप्त ने जिस साम्राज्य का निर्माण किया उसने उसका न केवल विस्तार किया बल्कि उसे पूर्णतया संगठित, सुव्यवस्थित एवं सुशासित कर 'प्राचीन भारत का स्वर्णयुग' का दावेदार बना दिया। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य निश्चित रूप से ना केवल गुप्त शासकों में वरन् भारतीय इतिहास के महानतम सम्राटों में से एक है। **(क्रमशः)**

संघर्ष के समकालीन साधन

10/- रुपए में राज करने का अधिकार - सूचना का अधिकार

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 (आर.आई.टी. एक्ट-2005)

प्रत्येक लोक प्राधिकरण (सरकारी कार्यालय) के कार्यकलाप को पारदर्शी और जवाबदेह बनाने की दृष्टि से लोक प्राधिकारियों के अधीन सूचनाओं (लोक दस्तावेज) तक नागरिकों की पहुँच व भ्रष्टाचार मुक्त शासन पद्धति स्थापित करने के उद्देश्य से सन् 2005 में जम्मू कश्मीर के सिवाय सम्पूर्ण भारत में संसद द्वारा लागू किया गया। प्रत्येक राज्य/केन्द्रीय कार्यालयों में इस अधिनियम के अन्तर्गत लोकसूचना अधिकारीयों की नियुक्तियां की गई है। वे उनके अधीन लोक दस्तावेजों (अभिलेख, ज्ञापन, दस्तावेज, ईमेल, राय, सलाह, प्रेस सूचना, परिपत्र, आदेश, लॉगबुक, संविदा, रिपोर्ट, कागजात, नमूने, मॉडल, किसी इलेक्ट्रिक रूप से रखी गयी डाटा सामग्री आदि) को मांगे जाने पर उपलब्ध करवायेंगे अथवा किसी नागरिक द्वारा उक्त सूचनाओं/दस्तावेजों का निरीक्षण करने के आवेदन पर निरीक्षण करवायेंगे।

आवेदन का नमूना/प्रारूप

सूचना अधिकार के तहत सूचना प्राप्त करने हेतु आवेदन (माना कि आपको ग्राम पंचायत में सूचना लेनी है।)

श्रीमान लोक सूचना अधिकारी एवं सचिव,

ग्राम पंचायत..... जिला.....(राजस्थान)

विषय :- सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के तहत सूचना प्रदान करने हेतु।

उपरोक्त विषय में लेख है कि आप निम्नलिखित बिन्दुओं की बिन्दुवार सम्पूर्ण जानकारी मय दस्तावेज प्रमाणित प्रतिलिपि उपलब्ध करावें।

1. यह कि मैं .....(आपका नाम, पता, मोबाइल पिनकोड सहित, राज.) का निवासी हूँ।
2. यह कि ग्राम पंचायत ..... में पंचायत एक्शन प्लान 2019-2020 के अन्तर्गत ग्राम पंचायत द्वारा अनुमोदित गतिविधियों में से दिनांक..... से सूचना मांगे जाने तक की दिनांक तक शुरू हुए समस्त निर्माण कार्यों, विकास कार्यों की लोकेशन, लागत सहित उन कार्यों हेतु किये गए भुगतान सम्बन्धी बिल वाऊचर, मस्टररोल सहित सम्पूर्ण दस्तावेजों की प्रति उपलब्ध करवायें।
3. यह कि..... की प्रति।
4. यह कि ..... की प्रति।
5. यह कि फीस के संदाय के रूप में 10/- का भारतीय पॉस्टल ऑर्डर संख्या..... सलंग्न है।
6. यह कि निर्धारित समय में सूचना मिलने पर मैं नियमानुसार अन्य शुल्क भी देने को तैयार हूं।

दिनांक :-

आवेदक
नाम व पता
मो.....

नोट :

- प्रत्येक कार्यालय के लोक सूचना अधिकारी की जानकारी सम्बंधित विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध है।
- आवेदन के साथ 10/-रुपये का शुल्क भारतीय पोस्टल आर्डर, नकद, डीडी आदि से भी जमा करवाया जा सकता है।
- जो नागरिक बीपीएल श्रेणी के हैं उन्हें सूचना निःशुल्क प्रदान की जायेगी तथा आवेदन भी निःशुल्क किया जा सकेगा।
- आवेदन पत्र हाथ से लिख कर अथवा टाइप कर भी प्रस्तुत किया जा सकता है।
- आवेदन प्रस्तुत करते समय एक प्रति अपने पास रखें, उस पर सम्बंधित कार्यालय से प्राप्ति रसीद अथवा मोहर लगवाकर रिसिप्ट लेवें जिससे लोक सूचना अधिकारी द्वारा निर्धारित 30 दिवस में सूचनायें उपलब्ध नहीं करवाने पर आप प्रथम अपील कर सकें।
- इस अधिनियम की पूर्ण जानकारी हेतु सभी को सूचना अधिकार अधिनियम की किताब का अध्ययन करना चाहिए।

प्रताप सिंह शेखावत
एडवोकेट, बनीपार्क,
जयपुर
मो. 9414465664

वीडियो गेम वास्तविक दुनिया से दूर हो रहे टीनेजर्स

एक वक्त था जब बच्चे और टीनेजर्स खाली समय में वीडियो गेम का आनंद लिया करते थे, लेकिन आज के दौर में वीडियो गेम का एक नया ही स्तर देखने को मिल रहा है। ऑनलाइन और मल्टी प्लेयर ऑप्शन उपलब्ध होने के कारण यह टीनेजर्स के बीच इतना लोकप्रिय हो गया है कि यह उन्हें वास्तविक दुनिया से पूरी तरह से दूर कर रहा है। बच्चों में वीडियो गेम की ऐसी लत देखने को मिल रही है, जिसके कारण वह पूरी तरह से गेमिंग की दुनिया में खो चुके हैं, एक ऐसी दुनिया जिसका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं है। इन बच्चों के आसपास क्या हो रहा है, किसी बात की कोई खबर नहीं रहती है। नई दिल्ली स्थित तुलसी हेल्थ केयर के मनोचिकित्सक डॉ. गौरव गुप्ता का कहना है कि सबसे बड़ी समस्या यह है कि वीडियो गेम की लत ही युवास्था में डिप्रेशन और गुस्सैल व्यवहार का मूल कारण बनती है। वीडियो गेम के इस दौर में बच्चे और टीनेजर्स आउटडोर गेम्स को पूरी तरह से भूलते जा रहे हैं।

टीनेज एक ऐसी उम्र है जिसमें बच्चों के दिमाग का विकास होता है। इस उम्र में उनके व्यवहार में सबसे ज्यादा परिवर्तन नजर आते हैं। इन बदलावों के कारण कोई भी नई चीज उन्हें अपनी तरफ आकर्षित करती है। यही कारण है कि इस उम्र में उन्हें अच्छी चीजों की आदत भी पड़ सकती है और बुरी चीजों की लत भी हो सकती है। अधूरे ज्ञान की वजह से उनमें चिंता और डिप्रेशन के शुरुआती लक्षण नजर आ सकते हैं। वीडियो गेम की वर्चुअल दुनिया में अधिक वक्त बिताने से बच्चों को अकेलापन महसूस होने लगता है और वे खोए-खोए से रहने लगते हैं। यहां तक कि व्यस्त जीवनशैली के कारण कई बार माता-पिता भी अपने बच्चों के साथ वक्त नहीं बिता पाते हैं, जिससे उन्हें प्यार, स्नेह और ध्यान की चाह होती है। इस चाह में वे इस तरह की चीजों से आकर्षित हो जाते हैं। मल्टीप्लेयर गेमिंग ने वीडियो गेम के स्तर को इस कदर बदल दिया है कि बच्चे खुद को इससे दूर रख ही नहीं पाते हैं। यह आभासी दुनिया बिना किसी रोक-टोक के उन्हें नई चीजों का अनुभव करने का मौका देती है। इस लत और वास्तविक दुनिया से दूरी के कारण बच्चों का विकास ठीक से नहीं हो पाता है और वे खुद को सामाजिक जीवन से दूर रखने लगते हैं। स्कूल और माता-पिता बच्चों को इन खेलों की लत से दूर रखने में एक अहम भूमिका निभाते हैं। यदि बच्चे किसी कारण से खोए से रहते हैं या अकेलापन और अवसाद महसूस करते हैं तो माता-पिता और स्कूल को तुरंत कोई कदम उठाना चाहिए, जिससे वे बच्चों को वास्तविक दुनिया में शामिल कर उन्हें सामाजिक रूप से सक्रिय रख सकें। माता-पिता और स्कूल को उन बच्चों को अलग-अलग गतिविधियों में शामिल करना चाहिए, जिसमें वे हर पल कुछ नया सीख सकें और इस प्रकार उन्हें वर्चुअल दुनिया से दूर भी रखा जा सकता है। डा. गौरव गुप्ता का कहना है कि माता-पिता को अपने बच्चों के साथ ज्यादा से ज्यादा वक्त बिताना चाहिए और उनके हर रुटीन पर नजर रखनी चाहिए. वीडियो गेम की लत के कारण कई बार बच्चे रात-रात भर सोते नहीं हैं, जिससे उनकी नींद पूरी नहीं हो पाती है और वे अधिक थकान महसूस करते हैं। इस प्रकार की दिनचर्या से धीरे-धीरे बच्चों को अकेलेपन की आदत पड़ने लगती है, जिसके कारण वे अपने माता-पिता से हर बात छुपाने लगते हैं। माता-पिता जितना ज्यादा वक्त अपने बच्चों के साथ बिताएंगे, उनके लिए इस तरह के गेम्स, ड्रग्स और गलत गतिविधियों में शामिल होने की संभावनाए भी उतनी ही कम होती हैं। माता-पिता होने के नाते यह समझना जरूरी है कि इस समस्या का मूल कारण वीडियो गेम नहीं है, बल्कि असल समस्या यह है कि ये गेम बच्चों के दिमाग को किस प्रकार बदल रहे हैं। इन गेम्स पर कम ध्यान देकर आउटडोर गतिविधियों (खेल, योग, एक्सरसाइज आदि) पर अधिक ध्यान दिया जाए तो बच्चों को अकेलापन और डिप्रेशन जैसी समस्याओं से दूर रखा जा सकता है।

विटामिन-डी की कमी के कारण बढ़ता है हड्डियों और जोड़ों का दर्द

ठंड में हर दूसरा व्यक्ति जोड़ों के दर्द की शिकायत करता हुआ नजर आता है। तापमान में कमी के कारण नसें सिकुडने लगती हैं और विटामिन डी की कमी के कारण हड्डियों और जोड़ों का दर्द बढ़ जाता है। हड्डियों में लचीलेपन की कमी हो जाती है, जिसके कारण जोड़ों में अकड़न आ जाती है। ठंड ने धीरे-धीरे दस्तक देना शुरू कर दिया है। वैसे तो सर्दी का मौसम अपने साथ कई बीमारियां लेकर आता है। लेकिन इन बीमारियों में जोड़ों का दर्द एक गंभीर समस्या है, जो हर उम्र के व्यक्ति को प्रभावित करता है। आज जोड़ों का दर्द एक ऐसी समस्या बन गया है जिससे हर कोई परेशान है। जैसे-जैसे मौसम ठंडा होता जाता है, वैसे-वैसे लोगों में जोड़ों के दर्द की परेशानियां भी बढ़ती जाती हैं। ऐसे में लोगों को अपने जोड़ों व हड्डियों का खास ख्याल रखना पड़ता है।

पी.डी.हिंदुजा नेशनल अस्पताल के हेड आथोर्पेडिक्स डा.संजय अग्रवाल का कहना है कि जब हमारी त्वचा सूरज की अल्ट्रा वॉयलेट किरणों के संपर्क में आती है तो हमारा शरीर विटामिन-डी बनाता है, लेकिन सर्दियों में धूप कम देर तक रहने के कारण शरीर इसे ठीक से नहीं बना पाता है। बढ़ती उम्र के साथ हड्डियां ठंड से अधिक प्रभावित होने लगती हैं इसलिए ऐसे लोगों को समय-समय पर गरम तेल से मालिश करवाना चाहिए। मालिश से हड्डियों को गर्माहट मिलती है जिससे नसों की सिकुड़न कम हो जाती है और दर्द से राहत मिलने लगती है। थोड़ी देर ही सही, धूप में बैठने से जोड़ों के दर्द से काफी राहत मिलती है। योग से सर्वाइकल की समस्या से छुटकारा मिल जाता है। ठंड के दौरान ज्यादातर मरीज हड्डियों की समस्या की शिकायत के साथ अस्पताल पहुंचते हैं। जबकि लोगों को यह समझने की जरूरत है कि ठंड के मौसम में हड्डियों की समस्याओं और दर्द से बचने के लिए एक्सरसाइज और सैर करना बहुत जरूरी हैं क्योंकि इससे हड्डियों को गर्माहट मिलती है और हड्डियां लचीली भी रहती हैं, जिससे पैरों में अकड़न की समस्या भी नहीं होती है। जो लोग ठंड में धूप नहीं सेंकते हैं या व्यायाम नहीं करते हैं, उनमें समस्या और अधिक बढ़ जाती है। दर्द से बचने के लिए रोजाना सैर करना आवश्यक है।

कैसे करें बचाव ?

मॉर्निंग वॉक है फायदेमंद : वैसे तो सुबह की सैर हर मौसम में सेहत के लिए फायदेमंद है, लेकिन सर्दी के दिनों में यह कुछ खास फायदा देती है। यह न केवल आपके शरीर को गर्माहट देती है बल्कि इस मौसम से संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं से भी बचाए रखने में सहायक होती है। टहलने से न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक क्षमता भी बढ़ जाती है और साथ ही तनाव दूर होता है। वजन उठाने वाली कसरत, चलना, दौड़ना, सीढ़ियां चढ़ना, ये व्यायाम हर उम्र में हड्डियों को स्वस्थ बनाए रखने में लाभदायक हैं। इसके अलावा डांस भी एक बेहतरीन एक्सरसाइज जिसे करने में हर किसी को मजा भी आता है और हड्डियों का स्वास्थ्य भी बना रहता है। बढ़ती ठंड के साथ जोड़ों की समस्याएं बढ़ने लगती हैं, इसलिए प्रतिदिन कम से कम 3 किलोमीटर की सैर करना आवश्यक हो जाता है।

पर्याप्त कैल्शियम व विटामिन-डी : डा.संजय अग्रवाल का कहना है कि हड्डियां कैल्शियम से बनी होती हैं, लेकिन हड्डियों को स्वस्थ रखने के लिए सिर्फ कैल्शियम का सेवन ही काफी नहीं है, बल्कि विटामिन डी का सेवन भी आवश्यक है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन ने सांसदों से ली सहयोग की सहमति

श्री प्रताप फाउंडेशन... वर्तमान में दिए गए आरक्षण में वे सभी सुविधाएं नहीं दी गई है इसलिए मांग की गई है कि वे सभी सुविधाएं देने का आग्रह किया है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन ने इसी मांग को आगे बढ़ाते हुए 21 नवम्बर को भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पुनिया के माध्यम से प्रधानमंत्री जी को पत्र लिखा। पुनिया ने बताया है कि उन्होंने प्रधानमंत्री जी से वार्ता के दौरान इस विषय पर उनसे आग्रह किया है। इसी क्रम में 23 नवम्बर को जयपुर सांसद रामचरण बोहरा व राज्यसभा सांसद डॉ. किरोड़ीमल मीणा से भेंट कर ज्ञापन सौंपा गया एवं इस विषय में केन्द्र तक प्रभावी ढंग से बात पहुंचाने में सहयोग की सहमति ली। इसी कड़ी में 23 नवम्बर को ही अजमेर सांसद भागीरथ चौधरी से मिलकर सहयोग की सहमति ली गई। 24 नवम्बर को जयपुर टीम ने चित्तौड़गढ़ सांसद सी.पी. जोशी एवं जोधपुर टीम ने पाली सांसद पी.पी. चौधरी व राज्यसभा सदस्य रामनारायण डूडी से मिलकर सहयोग की सहमति मांगी। सभी ने सकारात्मक सहयोग का आश्वासन दिया। अजमेर सांसद ने तो प्रधानमंत्री जी को पत्र लिखकर उसकी प्रतिलिपि भी हमे भेजी है। 29 नवम्बर को राजस्थान भाजपा के प्रदेश संगठन के साथ राजस्थान के सांसदों की बैठक में भी इस विषय पर चर्चा करने के लिए सांसदों के साथ-साथ केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्रसिंह , प्रदेश अध्यक्ष सतीश पुनिया व संगठन महामंत्री चन्द्रशेखर से आग्रह किया गया।

विटामिन-डी... (पृष्ठ छह का शेष)

विटामिन डी की कमी से हड्डियों में अकड़न आने लगती है और मांसपेशियों में कमजोरी आती है। ठंड में हड्डियां इतनी कमजोर पड़ सकती हैं कि आपको चलने-फिरने में भी समस्या हो सकती है। यदि इन समस्याओं से बचना है और हडिडयों को मजबूत बनाए रखना है तो विटामिन डी और कैल्शियम की पर्याप्त मात्रा का सेवन करें। मल्टीविटामिन भी कुछ हद तक फायदेमंद होती हैं।

खान-पान पर ध्यान : इसमें कोई शक नहीं कि शरीर को पोषण मिलना जरूरी है, लेकिन सर्दियों में इस बात का खास ख्याल रखना पड़ता है। इसलिए हड्डियों को स्वस्थ बनाए रखने के लिए नियमों का पालन करना चाहिए ताकि शरीर को पर्याप्त कैल्शियम, खनिज व अन्य पोषक तत्व मिलते रहें, जिससे हड्डियों और जोड़ों में होने वाले दर्द और अन्य समस्याओं से छुटकारा मिल सके। आप दूध, दही, ब्रोकली, हरी पत्तेदार सब्जियां, तिल के बीज, अंजीर, सोया और बादाम का दूध जैसे पौष्टिक आहार को खाद्य पदार्थ के रूप में शामिल कर कैल्शियम की जरूरत पूरी कर सकते हैं। विटामिन डी का सबसे अच्छा स्रोत सूरज की रोशनी है। डेयरी उत्पाद और कई अनाज, सोया दूध और बादाम के दूध में विटामिन डी प्रचुर मात्रा में होता है।

ऑक्सीजन में कमी : सर्दी के दौरान खून की धमनियां संकुचित हो जाती हैं, जिससे खून का प्रवाह सामान्य ढंग से नहीं हो पाता। शरीर के विभिन्न अंगों तक खून,पानी व ऑक्सीजन सही मात्रा में नहीं पहुंच पाते हैं। ऑक्सीजन की मात्रा कम होने पर शरीर की तंत्रिकाओं में तनाव पैदा हो जाता है, जिससे हड्डियों में दर्द का अनुभव होने लगता है।

गर्म पानी से नहाएं : जोड़ों के दर्द से परेशान रहने वाले लोगों के लिए तैराकी अच्छा व्यायाम है। पर स्विमिंग के लिए गर्म पानी की सुविधा नहीं मिल पाती है, इसलिए गर्म पानी से नहाना या गुनगुने पानी से पैरों की सिकाई जोड़ों को आराम पहुंचाता है। गर्म पानी से नहाने के तुरंत बाद खुले में जाने से बचें।

बैठने की आदतें : डा.संजय अग्रवाल का कहना है कि जो लोग कंप्यूटर पर काम करने के लिए लंबे समय तक बैठे रहते हैं, उनके जोड़ों में दर्द होना सामान्य है। एक ही जगह पर ज्यादा देर तक बैठने से हड्डियों में ठंड लगने के कारण अकडन आ जाती है, जिससे जोड़ों में दर्द की समस्या हो जाती है। इस समस्या से बचने के लिए थोड़ी-थोड़ी देर पर उठकर शरीर को स्ट्रेच करें। लंबे समय तक एक ही पोस्चर में न बैठें। कंधों और गर्दन को झुका कर न बैठें।

गंगासिंह साजियाली को मातृशोक

श्रीमती टीपू कंवर

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगासिंह साजियाली के माताजी **श्रीमती टीपू कंवर** पत्नी स्व. मूंजराजसिंह का 13 नवम्बर को देहावसान हो गया। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

मनोजसिंह पीपली को पितृशोक

रामपालसिंह

अलवर जिले में संघ के स्वयंसेवक मनोजसिंह पीपली के पिता **रामपालसिंह** का 20 नवम्बर को देहावसान हो गया। 70 वर्षीय रामपालसिंह रेलवे से सेवानिवृत थे। परमेश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

सुरेन्द्रसिंह स्यानण को पुत्री शोक

कमलेश कंवर

संघ के स्वयंसेवक सुरेन्द्रसिंह स्यानण की पुत्री **कमलेश कंवर** का 21 नवम्बर को देहावसान हो गया। परमेश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को इस आघात को सहने की शक्ति प्रदान करे एवं दिवगंत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

भोपालसिंह देवंदी का देहावसान

भोपालसिंह देवंदी

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **भोपालसिंह देवंदी** का 27 नवम्बर को देहावसान हो गया। वे 07.09.1957 से 09.09.1957 तक राखी में हुए प्रा.प्र.शि. में संघ के सम्पर्क में आए और अपने जीवन में 6 उ.प्र.शि., 11 मा.प्र.शि., 9 प्रा.प्र.शि. व 1 विशेष शिविर किए। वे इन दिनों संघ के बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में निवासरत थे।

भंवरसिंह गोटन का देहावसान

भंवरसिंह गोटन

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **भंवरसिंह गोटन** का 21 नवम्बर को देहावसान हो गया। वे 24.05.1958 से 07.06.1958 तक सुंधा माता जालोर में हुए उ.प्र.शि. में संघ के सम्पर्क में आए और अपने जीवन में 3 उ.प्र.शि., 5 मा.प्र.शि., 2 प्रा.प्र.शि. व 4 विशेष शिविर किए। वे अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पद से सेवानिवृत हुए थे।

धर्मेन्द्रसिंह आंबली को पुत्रशोक

कृतार्थ सिंह

संघ के गोहिलवाड़ संभाग के संभाग प्रमुख धर्मेन्द्रसिंह आंबली के 20 वर्षीय पुत्र **कृतार्थ सिंह** का 20 नवम्बर को हृदय की बीमारी से देहावसान हो गया। मैकेनिकल इंजीनियरिंग में तृतीय वर्ष के होनहार विद्यार्थी कृतार्थसिंह ने संघ के 8 शिविर किए थे। परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे परिवार को यह आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करें एवं दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

प्रतापगढ़ में युवा मार्गदर्शन कार्यशाला

प्रतापगढ़ स्थित हाउसिंग बोर्ड सामुदायिक भवन में समाज के प्रशासनिक अधिकारियों के निर्देशन में युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशाला का आयोजन किया गया। राजस्थान पेंशन विभाग में अतिरिक्त निदेशक विश्वजीत सिंह जाजली व अरनोद विकास अधिकारी धनसिंह कालेवा के प्रयासों से आयोजित कार्यशाला में बांसवाड़ा पुलिस अधीक्षक केसरसिंह शेखावत, महावीर सिंह जोधा आर.ए.एस. दीपेन्द्रसिंह आर.ए.एस., प्रकाशसिंह भदरु आर.टी.ओ., जितेन्द्रसिंह चुण्डावत बी.डी.ओ., विमलेन्द्रसिंह राणावत आर.टी.एस., सुरेन्द्रसिंह खंगारोत आर.टी.एस., वीरेन्द्रसिंह आर.टी.एस. आदि ने उपस्थित युवा शक्ति का मार्गदर्शन किया। प्रारम्भ में कार्यशाला के सह-आयोजक धनसिंह कालेवा ने बताया कि 2017 में संघशक्ति में प्रशासनिक अधिकारियों के स्नेहमिलन में इस प्रकार के मार्गदर्शन हेतु सामूहिक प्रयास करने का विचार पनपा। इसके लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयास किए गए, इसी के तहत आज की कार्यशाला आयोजित की जा रही है। महावीरसिंह जोधा एस.डी.एम. बालेसर ने इस बाबत जोधपुर टीम द्वारा किए जा रहे योजनाबद्ध प्रयास की जानकारी दी। वीरेन्द्रसिंह शेखावत ने जोधपुर जैसा प्रयास यहां होने पर पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। बांसवाड़ा एस.पी. केसरसिंह ने आत्मविश्वास के साथ तैयारी करने की आवश्यकता व्यक्त की। अन्य अधिकारियों ने पूर्वाग्रह रखे बिना एकाग्रता से अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया एवं बताया कि पढ़ाई के दौरान सभी गतिविधियों में भाग लेना चाहिए। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। आयोजक विश्वजीतसिंह जाजली ने सबका आभार जताया।

21 वर्ष के जज मयंक प्रतापसिंह

मयंक प्रतापसिंह

हर्षिता सिंह

ध्वनि तंवर

न्यायिक सेवा की आर.जे.एस. मुख्य परीक्षा 2018 में मयंक प्रतापसिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मात्र 21 वर्ष की आयु में जज बनने वाले मयंक प्रताप देश में सबसे छोटी आयु के जज हैं। कृतिका शेखावत ने पांचवी रैंक व कनिष्का राठौड़ ने बारहवीं रैंक हासिल की है। 32वीं रैंक पर आई हर्षिता सिंह पाली जिले के वाड़िया गांव निवासी मनोहरसिंह चांपावत की पुत्री है। प्रतिभा राठौड़ ने 87वीं रैंक हासिल की है वहीं संघ के स्वर्गीय स्वयंसेवक लक्ष्मणसिंह रायसर की दोहिती ध्वनि तंवर ने 90वीं रैंक हासिल की है। ध्वनि तंवर बीकानेर जिले के दाउदसर गांव निवासी दुष्यंतसिंह की पुत्री है।

बालिकाओं का सम्मान

राजमाता कृष्णा कुमारी कन्या छात्रावास देसूरी की बालिकाओं के शैक्षणिक भ्रमण के दौरान 17 नवम्बर को सुमेरपुर में समाज की बालिकाओं का सम्मान तखतसिंह चाणोद के आवास पर किया गया। तखतसिंह की धर्मपत्नी ने प्रत्येक बालिका को तिलक लगाकर व भेंट देकर सम्मान किया गया। उपखण्ड अधिकारी सुमेरपुर राजेन्द्रसिंह सिसोदिया ने अनवरत अध्ययनशील रहते हुए भविष्य की संभावनाओं के बारे में जानकारी दी एवं भ्रमण के दौरान व्यवस्थाओं की जानकारी ली। इस अवसर पर बी.ई.ई.ओ. परबतसिंह खिदारागांव, प्रधानाचार्य गजेन्द्रसिंह राणावत आदि उपस्थित थे।

कुचामन में बैठक

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की बैठकों के क्रम में 17 अक्टूबर को नागौर जिले के शेष भाग की बैठक संघ के संभागीय कार्यालय 'आयुवान निकेतन' में रखी गई जिसमें कुचामन, नावां, मकराना, परबतसर, डीडवाना, लाडनूं क्षेत्र के आमंत्रित समाज बंधु शामिल हुए। बैठक में संयोजक यशवर्धनसिंह झेरली द्वारा फाउंडेशन की भूमिका, उद्देश्य, संघ से संबद्धता व अब तक हुए कार्य की जानकारी दी गई। बैठक में हुए संवाद में बांगड़ कॉलेज डीडवाना की अध्यक्ष गरिमा कंवर, नारायणसिंह गोटन, जयसिंह मीठड़ी, दिलीपसिंह मकराना, विनोदसिंह लिचाणा, गजेन्द्रसिंह ओडिट, तंवरसिंह जेवलियावास आदि ने नागोर जिले के संदर्भ में फाउंडेशन के विषय में अपनी बात की। नागौर के राजनीतिक परिदृश्य में जातीय समीकरणों को लेकर अपने अनुभव साझा किए। बैठक में लाडनूं, परबतसर, डीडवाना, मकराना आदि स्थानों पर तहसील स्तरीय बैठकें करने का कार्यक्रम भी बना।

गजसिंह शिक्षण संस्थान ओसियां की कार्यकारिणी गठित

ओसियां स्थित राजपूत छात्रावास में गजसिंह शिक्षण संस्थान की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें गोपालसिंह भलासरिया को अध्यक्ष, पदमसिंह ओसियां को सचिव, महेन्द्रसिंह अणवाणा, प्रेमसिंह तिंवरी, भींवसिंह रायमलवाड़ा व चन्दनसिंह पल्ली को उपाध्यक्ष तथा हुकमसिंह पड़ासला को कोषाध्यक्ष चुना गया।

डॉ. आईदानसिंह भाटी को बिहारी पुरस्कार

राजस्थान के लेखकों को के.के. बिरला फाउंडेशन द्वारा दिया जाने वाला बिहारी पुरस्कार इस वर्ष राजस्थानी भाषा के कवि आईदानसिंह भाटी को उनके कविता संग्रह 'आंख हीयै रा हरियल सपना' के लिए दिया गया है। डॉ. भाटी का जन्म जैसलमेर के नोख गांव में हुआ एवं वर्तमान में जोधपुर में निवासरत है।

अर्जित किए 99 फीसदी अंक

महारानी गायत्री देवी गर्ल्स स्कूल जयपुर की 12वीं कक्षा की छात्रा सुश्री वामासिंह शेखावत पुत्री रणजीतसिंह शेखावत ने आल इण्डिया सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा 2019 में भूगोल विषय में 99 प्रतिशत अंक अर्जित कर विशेष योग्यता प्रमाण-पत्र प्राप्त किया है। छात्रा संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक हनुवंतसिंह नंगली की पौत्री है। उन्हें उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. कमलसिंह को अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पुरस्कार

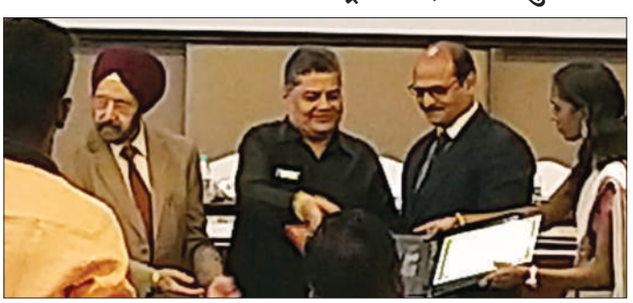

भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ फार्मेसी के वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक एवं संघ के स्वयंसेवक डॉ. कमलसिंह बेमला को विशाखापट्टनम में विडीगुड प्रोफेशनल एसोसिएशन द्वारा इंजीनियरिंग, मेडिकल और विज्ञान के वैज्ञानिकों के लिए आयोजित द्वितीय अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पुरस्कार संगोष्ठी में फार्मेसी के क्षेत्र में उत्तम अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org